वर्तमान में नारी विमर्श ISBN: 978-81-947902-7-3

रेणु के उपन्यासों में नारी का जीवंत दस्तावेज

डॉ० बिजय रवानी
विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
महाराजा श्रीशचन्द्र कॉलेज
कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत

प्राचीनकाल से स्त्री अपनी कोमल भावनाओं तथा समर्पित जीवन से पुरुषों के लिए प्रेरणा की स्त्रोत है। मातृत्व की पीड़ा को सुखद मानकर स्त्री ने सृष्टि का सृजन किया और विश्व मंगल की कामना रखी तथा वह त्याग, सेवा और बलिदान का प्रतीक बन गई। हिंदी उपन्यासों में नारी जीवन की विविध झाकियां देखने को मिलती है। आजादी से पूर्व हिंदी उपन्यासों में किसान और मजदूरों की समस्याओं को केंद्र में रखकर, नवजागरण की चेतना से प्रभावित किया जाता था। स्त्री के लिए उसे घर के चौखट से बाहर निकलना मुस्किल था। पर आजादी मिलने के बाद और भारतीय संविधान लागू होने के बाद भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति में जबरदस्त बदलाव आ गया।इसे नारी जागरूकता का दूसरा चरण कहा जा सकता है।

उपन्यास के प्रारंभ से ही नारी जीवन के विभिन्न पक्षों को लक्षित किया जाने लगा।इस संदर्भ में मैनेजर पाण्डे का कहना हैं ''उपन्यास ने अपने उदयकाल से ही स्त्री की पराधीनता का बोध और स्वतंत्रता की आश्याकता की और संकेत किया हैं।''[1] हिंदी में उपन्यास का उदय ही समाज में स्त्री के बोध के साथ हुआ था।

परन्तु प्रारंभिक दौर में स्त्री जीवन के चित्रण में उपन्यासों को विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई क्योंकि उपन्यासकारों की स्त्री– दृष्टि मुख्यतः सामंती प्रवृति हावी थी। इसलिए अधिकांश सुधारवाद, मनोरंजन उपदेश एवं कल्पनाओं की तर्ज पर स्त्री जीवन के प्रश्नों को उठा रहे थे। जिस प्रकार रेणु के आगमन से आंचलिक उपन्यास विधा को परिपक्वता प्राप्त हुई उसी प्रकार स्त्री जीवन का सजीव आदर्श एवं यथार्थ रुप में भी रेणु के उपन्यासों से उत्कृष्टता प्राप्त कर सका।

रेणु का अविर्भाव उपन्यास के तृतीय चरण में हुआ। इस समय उपन्यासों पर व्यक्ति स्वतंत्रता की अवधारणा पूरी तरह हावी थी। स्त्री एक व्यक्ति के रूप में पहचानी जाने लगी थी। इस दौर में जिन स्त्रियों को व्यक्ति मारकर व्यक्ति स्वतंत्रता की बात की जा रही थी रेणु की स्त्रियों से भिन्न थी। जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल आदि उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों से जिस स्त्री को पाठक से अवगत कराया है, वह स्त्रियां मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। रेणु ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण निम्नवर्गीय स्त्री को विशेष स्थान दिया। यही उनका महत्व है, और इन्हीं मुद्दों पर रेणु प्रासंगिक भी है। स्त्री दृष्टि के संदर्भ में देखा जाए तो रेणु ने यह स्पस्ट किया है कि ग्रामीण स्त्री किस प्रकार विकास की प्रक्रिया से बाहर हैं। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के सामने स्त्री की भूमिका नगन्य होती है। पुरुष समाज में जहां मध्यवर्गीय स्त्रियां अपने अस्तित्व को लेकर सजग दिखती है, वहीं ग्रामीण स्त्री के लिए उसके अस्तित्व का नियायक पुरुष ही रहा। पुरुष समाज द्वारा बनाई गई विकास योजनाओं में स्त्री की भूमिका और जरूरतों को नजर अंदाज किया गया है रेणु ने अपने उपन्यास में स्त्री शोषण, उत्पीड़न की अभिव्यक्ति के तरीकों, समाज में स्त्री का स्थान आदि मुद्दे उठाए है।

मैला आंचल (1954) में प्रकाशित इस उपन्यास की कथावस्तु बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के मेरीगंज ग्रामीण जिंदगी से संबंध हैं। रेणु के अनुसार इसमें फूल भी है, धूल भी है, गुलाब भी है, और कीचड़ भी। मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया। इसमें गरीबी, रोग, भूखमरी, जहालत, धर्म की आड़ में हो रहे व्यभिचार, शोषण, बाह्यडंबर, अंधविश्वास, नारी उत्पीड़न आदि का चित्रण है। उपन्यास में ग्रामीण यथार्थ के धरातल पर अंचल के समाज में व्याप्त तथा वहां के जीवन से संबंध यौन समस्या का मार्मिक रूप में चित्रण मिलता है। उपन्यास में वर्णित यौनाचार पिछड़े अंचलों की वस्तुस्थिति है, वहां मठो एवं मंदिरों में व्याप्त अनाचार को और व्यभिचार एवं यौनाचार को सभी लोग जानते हैं या उसे चुपचाप समझते भी हैं। उदाहरण के लिए लक्ष्मी कोठारिन के अंधे महंत सेवादास, रामदास, बालदेव के साथ यौन संबंध है जिसे उसने स्वयं स्वीकार किया है। रामदास और रामप्यारी के बीच भी यौन संबंध है। दरअसल भारतीय समाज का परंपरागत ढांचा इस प्रकार है कि अभी भी नारी को भोग की वस्तु माना जाता है और वे अभिशप्त जीवन जीने को मजबूर है। इस उपन्यास का एक पात्र जो डॉक्टर है वह कहता है– ''हुजूर लड़की की जात बिना दवा–दारू के ही ठीक हो जायेगी।''[2] भोली भाली लड़की कमली डॉ० प्रशांत के प्रेम में पड़ती है। जब डॉक्टर प्रशांत जेल में रहते हैं तो वह बिना विवाह के उसके के बच्चे की मां बनती है। इस तरह वह सामाजिक मान्यताओं को दरकिनार करती है। कमली का चरित्र एक प्रेमिका तथा मां के रूप में सशक्त रूप से उपन्यास में उभरता है। कमली डॉ० प्रशांत से अत्यंत प्रेम करती हैं और उसकी कथन है ''आज उसे डॉक्टर की बार–बार याद आती है। डॉक्टर का हंसना, बोलना, रूठना, झगड़ना उसकी आंखें भर–भर

आती है। लेकिन डॉक्टर ने कहां है जो होगा मंगलमय होगा! यदि डॉक्टर को दामुल हौज हो जाय तब मां रोती क्यों थी, महाभारत में कुंती, देवयानी, अहलया, द्रौपदी कौन ऐसी है जिसको डॉक्टर ने कहा है, हम दोनों को कोई अलग नहीं कर सकता है।''[3]

मेरीगंज समाज का जो चरित्र है, वैसे चरित्र वाले समाज में नीची जातियों के श्रम, जजमानी और स्त्रियों सवर्ण जातियां अपना अधिकार समझते हैं। सहदेव मिसिर, तंत्रिमा टोली की फुलिया पर अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। मेरीगंज की नीची जाति के नौजवान इस सत्य को समझते भी हैं। मैला आंचल को रेखांकित करते हुए डॉक्टर कमला गुप्ता ने कहा है' ''ग्रामीण जीवन अब भी परंपरावादी मूल्यों का पोषण है। वहां की नारी विवाह के विषय में आज उतनी ही पराश्रित अशक्त और अबोध है। गांव में नारी का भाग्य उसके माता पिता के हाथ में है। जैसे भी और जिसके भी हाथ में सौंप सकते है। उसे सहर्ष स्वीकार करती है।'[4] 'मैला आंचल में पांच प्रमुख नारीपात्र है' लक्ष्मी, कमला, फुलिया, मंगलादेवी और ममता इन्हीं पात्रों के माध्यम से रेणू जी ने स्त्री के स्मिता के प्रश्न को समझने का प्रयास पाठकों के ऊपर छोड़ दिए है।

जूलूस (1966) उपन्यास पूर्वी बंगाल की एक विस्थापित युवती पवित्रा को केंद्र में रखकर लिखी गई है। रेणु विभिन्न विशेषताओं एवं सामाजिक व्यवहार वाले मनुष्यों का एक चित्र सामाजिक जुलूस के रूप में रेखांकित करते है। इस उपन्यास के कथानक से समूचे देश की स्त्रियों की समस्याओं को समझा जा सकता है। इस उपन्यास की स्त्रियों की वेदना समाज का आईना है। इस उपन्यास की स्त्री पात्र पवित्रा विवाह से पूर्व विनोद नामक युवक से अवश्य प्रेम था। उसके साथ उसका विवाह भी तय हुआ था, परंतु

सांप्रदायिक दंगों में विनोद की हत्या हो गई। उसके बाद उसका हमशक्ल पत्रकार नरेश के प्रति पवित्रा के मन में कुछ आकर्षण अवश्य रहा। परंतु इसे प्रेम कहने के बजाय मात्र घनिष्ठ कहना उचित होगा, यद्यपि काला की मां दोनों के विवाह की बात अवश्य छेड़ती है। इस प्रसंग पर पवित्रा कहती है। ''मैं सिर्फ पवित्रा नहीं मैं आग हूं, मैं तलवार हूं, मैं बर्छी हूं, मैं जहर हूं, मैं सापिन हूं।''[5] पवित्रा इस उपन्यास में क्रियाशील आधुनिक नारी है, वह नवीनगर के गोड़ियार अवगुण प्रवृत्तियों को दूर करना चाहती है। कुमारी सरस्वती देवी रामगंज पिपरा कन्या पाठशाला की अध्यापिका है। परंतु दुर्दशा की शिकार सरस्वती की कथा करुण तथा दयनीय है। भाग्य ने एक पाठशाल की अध्यापिका को कहां से कहां तक पहुंचा दिया। पापी स्कूल इंस्पेक्टर के अत्याचार पूर्ण अनाचार ने सरस्वती को कुंवारी मां बनना पड़ा। उसकी सजा में उसे अपाहिज पति मिला इस के संदर्भ में कहा जाता है कि ''पांच हजार रुपया, नगद देकर सरस्वती को खरीदा था। दीपा के बाबू ने सब कुछ माफ कर दिया। लेकिन घर में घुसे तो बाहर नहीं हुए। उनकी लाश ही निकली।''[6] सरस्वती ने अनिच्छा के साथ जिंदगी से समझौता किया। विवाह के उपरांत आठ महीने पति के साथ नरक जैसे बीते। अपाहिज पति के नजरों में वह मात्र मशीन थी। शिक्षिता सरस्वती महत्वाकांक्षी थी वह पारस से कहती है ''मैं डॉक्टरनी नहीं लीडरानी होना चाहती हूं।''[7] सरस्वती के नैतिक पतन के लिए जिम्मेदार स्कूल इंस्पेक्टर तथा उसका अपाहिज पति है। सरस्वती के संबंध में आत्मसम्मान अवश्य है परंतु बाह्य रूप से स्वैराचार भी लक्षित होता है। पहलवान जेठपारस प्रसाद कारेमंडल, रामजय जैसे पुरुषों के साथ भी अनैतिक शारीरिक संबंध है। परंतु अपनी पुत्री दीपा को लड़के की तरह रखती है। तालेवर

गौड़ी ब्याहता के अलावा कई स्त्रियों से यौन संबंध स्थापित करता है। उनके वशीकरण हेतु जादू टोना, मंत्र, तंत्र सब कुछ करता है। उसकी ये सारी करतूतें पूरी तरह जानते हुए भी उसकी पत्नी को सब कुछ चुप चाप सहन करना पड़ता है। भारतीय समाज व्यवस्था में विधवा नारी का सामाजिक एवं पारिश्रमिक जीवन एकांकी उपेक्षित एवं वेदनाओं से अभिभूत रहा है। किसी भी प्रकार का सुख भोग, श्रृंगार करने कि उसे अनुमति नहीं । तीज त्यौहार में विधवा का सम्मिलित होना अशुभ अपशकुन माना जाता है। इस उपन्यास में पवित्रा, तालेश्वर गौड़ी, सरस्वती, पारस, संध्या आदि के माध्यम से स्त्री वेदना को रेणु ने स्पर्श किया है। परती परिकथा (1957) उपन्यास में पारनपुर गांव को कथा के केंद्र में है। गांव में जातियों एवं उपजातियों की स्थिति वैसी है जैसा मैला आंचल की। उपन्यास का नायक जीतन अपने निजी अनुभव से राजनीति की कटुता और षड्यंत्र को बुरा समझता है और उससे सदा दूर रहता है। पूरी कथा को एक रोचक प्रेम कथा के साथ शिवेंद्र तथा ताजमनी और जीतन तथा इरावती की प्रेम कथा में सीमित कर दिया गया है। इस उपन्यास में मुख्यता स्त्री पात्र ताज– मनी, मल्हारी, इरावती, सामबती पीसी, गीता मिश्र आदि प्रसंगों के माध्यम से उसकी विवशता को रेखांकित किया गया है। इस उपन्यास की मालारी परंपरागत जाति के बंधन को तोड़कर शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति विकास के पथ पर मार्गस्थ विद्रोही नारी है। मलारी अछूत माने जाने वाली निम्न चमार जाति के माहीचन की बेटी है। पिछड़ी जाति के असभ्य पिता द्वारा गाली–गलौज, मारपीट, दोस–दुर्गुण, आरोपों को सहती हुई, दरिद्रता के बावजूद टोली के जन–जीवन से संघर्ष करके शिक्षा प्राप्त कर, मलारी अपने बलबूते पर मास्टरनी बनी है। वह बाल्यावस्था के सात

वर्ष की उम्र से ही वह दुनिया के लोगों की जहरीली निगाहें पहचानने लगी है। मलारी पुरोगामी विचारों की वह नारी है, जो समाज में निरंतर संघर्ष करती हुई प्रगतिशील है। घर बाहर के विरोध प्रवाह में वह क्रियाशील नारी है।

ताजमनी औरतों के जीवन में सुधार लाना चाहती है। वह आसक्त प्रेमिका से भी अधिक ममतामयी वात्सल्य की मूर्ति है। जीतन ताजमनी से अपने को सुरक्षित पाता है। रेणु के अनुसार,– ''जितेन्द्रनाथ को अचरज हुआ ताजमनी के कंठ में बैठकर माँ बोल रही है। ताजू के चेहरे पर स्पष्ट छाप, माँ की एक परिचित मुस्कान की।''[8] बोलते समय ताजू के सुंदर चेहरे की ठुड्डी में पड़नेवाले गड्ढे से सौंदर्य और भी वृद्धि गत होता है। ताजमनी तन–मन से जितन के प्रति समर्पण का भाव रखती है। उसका मंगल चाहती है। देवी से प्रार्थना करती है उसका अमंगल कैसे देख सकेगी तू ताजमनी सौंदर्य का त्याग, समर्पण, प्रेम, तेजस्विता, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति है। जाति की कुरीति के पाश को उसने तोड़ दिया है। दूसरी टोली कि नारियों को भी कुरीतियों से मुक्त कराके उन्हें मनुष्यता का हक दिलाना चाहती है। उदांत आदर्श एवं पवित्रता से संपन्न चरित्र है ताजमनी का। जैसा पानी में खिला कमल का फूल सा सामान।

इरावती शिक्षित और साहसिक नारी है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के विभिन्न प्रदेशों में शिक्षित नारियों का योगदान विकसित होता जा रहा है। राजनैतिक नेता के साथ कालका मेंल से इरावती अकेली यात्रा करती है। यात्रा के दौरान नेता भैया उसे भ्रष्ट करने की कोशिश में असफल होते हैं। उस समय इरावती का निर्भीक रूप दृष्टिगत होता है। रेणु के अनुसार –''नेता भैया लजाते क्यों हो? तुमने कोई अधर्म नहीं किया। हजारों औरतों पर बलात्कार होते देखा

है मैंने। दिन–दहाड़े सड़कों पर दर्जनों बार बलात्कार की पीड़ा से छटपटयी हूँ। चीखती रही हूँ, गला फाड़ कर इतना कुछ देखने और सहने के बाद किसी औरत का दिल–दिमाग प्यार करने के काबिल कैसे रह सकता है, और बलात्कार करने के सिवा और कुछ कर सकता है।''[9] निजी अनुभव तथा समाज में नारी की दयनीय दर्दनाक स्थिति से इरावती भली भाँति परिचित है। जिसके कारण इरावती का मन आंतरिक प्रेम भावना मृत सी हो गई है। उसे किसी के प्रति विश्वास, प्रेम निर्माण ही नहीं होता। हां एक शख्स है जिसके लिए वह बेचौन हो उठती है, रेणु के अनुसार ''जितेंद्रनाथ मिश्र के लिए कभी–कभी वह बेचौन हो उठती है। उसी से इरावती के उजाड़ मन में प्रेम को पनपाया है, पहली बार।''[10] इस उपन्यास में धर्म, संस्कृति तथा जाति के आधार पर पुरुष प्रधान समाज शोषण का प्रतीक है। दीर्धतपा (1963) उपन्यास की नायिका कुमारी बेला गुप्त अपने समाज सेवा कार्य में कभी–कभी कष्टों के असहाय होने पर सोचने लगती है कि विमला मौसी के बिना कष्ट झेलने की क्षमता उसमें नहीं रह गई है। बेला के मन में बसी रमला मौसी ने सिस्टर निवेदिता का आदर्श सामने रखकर जीने की प्रेरणा दी है। नायिका बेला का उज्जवल चरित्र इस उपन्यास में उभर कर सामने आया है। इस उपन्यास में स्त्री के त्याग, स्वाभिमान उभर कर आया है, बेला के बारे में स्वयं रेणू जी ने कहा है ''एक हीन मनोवृति का कोहरा युद्ध के बाद से ही घना होकर सारे समाज पर छा रहा है इस धुंध में दीपावली की तरह खिली बेला गुप्त बुझ गई।''[11] बेला गुप्त इस उपन्यास की सशक्त स्त्री पात्र हैं। जो केवल आदर्श की पुतली मात्र नहीं है, बेला गुप्त और श्रीमती ज्योति आनंद के बीच भेद नहीं है कि दोनों जिंदगी के उतार–चढ़ाव के बीच डूबती उतरती है, दोनों जीवन की विकृतियों

को भोग चुकी है फिर भी एक जीवन की विकृतियों को भगाकर उससे अलग हट गई है और दूसरी ने इन विकृतियों को ही अपना व्यवसाय बना लिया। श्रीमती आनंद आज के सड़े गले प्रतीत पर जीवन का निर्धारण करती है। और बेला गुप्त एक प्रगतिशील नारी है, विद्रोहिणी है। आधुनिक युग की सफेद पोश महिला संस्थाओं में अनैतिक और व्यभिचारी का भण्डाफोड़, घिनौना और कुत्सित व्यवसाय, ज्योति आनंद जैसी आधुनिक महिलाएं करती है। बेला गुप्त जैसी नारियां जीवन और ऐसे समाज से संघर्ष करती आ रही है। बेला का आदर्श सिस्टर निवेदिता है और सिस्टर निवेदिता का आर्दश बेला के जीवन में पूर्ण रुप से प्रति फलित हुआ है, रेणु जी के अनुसार –"And the Majesty of the soul comes fourth ,only when someone is wounded to his depth."[12] मनु की इस उक्ति के अनुसार भारतीय समाज में पूजनीय माना गया है। भारतीय समाज में पुरुषों के समान ही स्त्री को स्थान मिला है। फिर भी धर्म, संस्कृति की आड़ में नारी जीवन नरकीय जीवन से कम नहीं है।

अत्याचारों को सहने की क्षमताए हिनता का अहसास, मजबूर लाचार जीवन जीने की आदत नारी पर बाल्यकाल से ही थोपीं जाती है, जिससे साहित्य में, जीवन में नारी की कहानी अबला जीवन की कहानी, आंसुओं की बनी रही। बदलते समाज के साथ नारी जीवन में भी कई प्रकार के परिवर्तन हुए परंतु उसकी खस्ता हालतदुर्दशा दयनीय अवस्था कम नहीं हुई । नारी सुधार के प्रयास अवश्य हुए फिर भी नवजीवन समस्याओं में नारी जीवन उलझता ही गया।

कितने चौंराहे (1966) उपन्यास में उत्तरी बिहार का काशी क्षेत्र को कथानक का आधार बनाकर आजादी के तुरंत बाद के

ग्रामीण भारत में हो रहे गतिविधियों को चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में से शरबतिया, निलीमा आदि स्त्री पात्रों के चरित्रों के माध्यम से स्त्री की दयनीय स्थिति का उल्लेख किया गया है। शरबतिया एक विधवा है उसका जीवन बड़े ही कष्ट में है, मामी अब अपने दुःख अपनी इकलौती बेटी के फूटे हुए कपाल की कहानी सुनाती है ''छोटके पाहुन, जब बेटी की खाली (सींथ) पर नजर पड़ती है तो लगता है, कलेजे पर किसी ने गरम लोहा रख दिया है।"[13] किसी भी समाज का उत्कर्ष नारी के सामाजिक स्थान पर निर्भर करता है। समाज का उत्थान पतन का स्तंभ नारी का विविध रूप ही है। अतः परिवार समाज की बुनियादी ही होती है। इस उपन्यास में त्यागमयी बेटे की माँ का भी रूप चित्रित हुआ है। मनमोहन की माँ ना हस्ती है, न रोती है। ना हुलसकर कुछ पूछती है न बिलखकर बेटे के बारे में कुछ कहती है क्योंकि तीन–तीन संतानों की तीन–तीन माह के भीतर मृत्यु हो जाने के बाद मनमोहन का जन्म हुआ था। सरबतिया साइमन–बाईकाट शहीद की विधवा है वह सदैव उदास रहती है किंतु मनमोहन के घर आने–जाने से वह खुश रहती है, मनमोहन के प्रति उसके मन में मातृत्व मिश्रित आकर्षण विद्यमान है, नीलिमा कोपहली बार देखते ही मनमोहन आकर्षण का अनुभव करता है। मनमोहन के प्रति आकर्षण के कारण ही वह 'भारत छोड़ो आंदोलन' के समय ट्रेजरी पर झंडा फहराने के लिए बढ़ रहे मनमोहन को पागलों की तरह पकड़ लेती है और उसकी आत्मग्लानि का कारण बनती है, मनमोहन के प्रति आकर्षण के बावजूद उसके व्यवहार में कहीं भी शालीनता भंग या अनैतिकता दिखाई नहीं देता।

पल्टू बाबू रोड (1979) उपन्यास रेणू के निधन के बाद प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का कथानक गाँव के इलाके को

छोड़कर वह बैरगादी कस्बे को कथावस्तु बनाते हैं। इस उपन्यास में उच्च वर्ग के अंतविरोधो, उसकी गिरावट, राजनीतिक और आर्थिक संबंधों में यौन–व्यापार आदि का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास की प्रमुख स्त्री बिजली है वह आर्थिक ढांचे को संभालने के लिए छोगमल की वासना का शिकार बनती है। उसने पल्टू बाबू की वासना का प्रतिकार किया था, अतः पल्टू बाबू उस अपमान की गांठ बांध बैठते हैं। मुरली मनोहर मेहता बिजली को बचपन से चाहता है, मुरली मनोहर जब जिला कांग्रेस का सेक्रेटरी बनकर आता है तो वह उसको पाना चाहती है। इसे पाने में केवल आर्थिक स्वार्थी नहीं, दबी हुई कामवासना भी है। बिजली अपने स्वयं को कुंतला से असुरक्षित समझती है, इसलिए कुंतला के पूर्व प्रेमी गोधन को अपने प्रेम पाश में फंसाती है। उसकी काम भावना तीव्रता की हद तक पहुँच जाती है। इस उपन्यास के अधिकांश पात्र किसी न किसी रूप में काम भावना से ग्रस्त है, चाहे वह विजातीय हो या समलैंगिक। इस निष्ठा रूप को उभारने में लेखक सफल रहा है।

आज जिन स्त्रियों की व्यक्ति मानकर 'व्यक्ति स्वतंत्रता' की बात की जा रही है, वे स्त्रिया रेणु की स्त्रियों से भिन्न है। जैनेंद्र, अज्ञेय आदि उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में जिस स्त्री को पाठकों से अवगत कराया है वे स्त्रियाँ मध्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है तथा अपनी निर्णय के लिए स्वतंत्र है परंतु रेणु की स्त्रिया निम्नमध्यवर्गीय ग्रामीण है तथा वे अपनी समस्याओं को सुलझाने में सफल नहीं है, तथा रेणु ने अपनी स्वतंत्र स्त्री–दृष्टि का परिचय दिया है । भरत यामावर का मत है, ''रेणु ने अपने उपन्यासों में सताए हुए शोषित पात्रों की सांस्कृतिक संपन्नताए मन की कोमलता और रागात्मकता तथा कलाकारोचित प्रतिभा का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत

किया है।''[14] रेणु की स्त्री पात्र संघर्ष के साथ–साथ स्त्री मन की कोमलता, प्रतिभा, सांस्कृतिक संपन्नता आदि उनके जीवन के तमाम पहलुओं को टटोलते नजर आते हैं। स्वतंत्रपूर्व तथा स्वतंर्त्योत्तर भारत में नारी जीवन अत्यधिक पीड़ित दुर्बल एवं प्रताड़ित रहा है। नारी जीवन से संबंध्द कई समस्याएं इस देश में थी जिनमें वेश्यावृत्ति, अनमेल विवाह, बाल विवाह, अवैध सम्बन्ध, दहेज की कुप्रथा, विधवा की समस्या पुनर्विवाह, रखैलिन जैसे सामाजिक कुप्रथा ने नारी जीवन शोषित, दमित, हीन, दुर्बल, कुंठित होता रहा है। मैला आंचल की अधिकांश नारी पात्रों में देखा जा सकता है। किंतु शिक्षा के प्रचार–प्रसार की गति निर्णायक जीवन की नायिका सिद्ध होने लगी। 'मैला आंचल' की लक्ष्मी 'परती परिकथा' की मलारी 'जुलूस' की पवित्रा, कितने चौराहे' की शरबतिया, दीर्घतपा की बेला गुप्त।

रेणु जी के उपन्यासों में नारी की स्थिति और उसकी समस्याओं वेदनाओं का चित्रण यथार्थ रूप में हुआ है, नारी जीवन की अस्तव्यस्तता, पीड़ा, अधःपतन एकरूणा अवस्था, पुरुष वर्ग द्वारा तुच्छता मनोभावों का विस्तृत चित्रण देखने को मिलता है। 'मैला आँचल की लक्ष्मी कोठारिन जुलूस की सरस्वती, दिर्धतपा की बेला गुप्त, 'परती परिकथा की ताजमनी की माँ पुरुष की वासना का शिकार बनती है। नारी जीवन की दयनीय स्थिति के दर्शन जो 'जुलूस में नवीनगर की शरणार्थी कॉलोनी में लक्षित होते हैं, उसके संबंध में डॉ० सुरेंद्र प्रताप यादव का कहना है कि ''बंगालियों की कॉलोनी में स्कूल के लिए लिए बंधी नारी अभिशाप जीवन जीने को बाध्य हैं। कभी बाल विवाह उनके लिए अभिशाप बन जाता है तो कभी अनमेल विवाह, उनके जीवन की विडंबना और कभी इन दोनों समस्याओं का परिणाम विधवा जीवन उसके लिए बनकर रह जाता

है।'[15] रेणु जी बदलते सामाजिक परिवेश में नारी की मानसिकता वाले परिवर्तनों को अंकित किया है। 'जुलूस' की पवित्रा शरणाथियों में नई आस्था प्रेरणा और संस्कारों की नई दिशा देने वाले तेजस्विनी है। पारंपारिक और सहनशील पत्नी के रूप में स्त्री को हम 'परती परिकथा में देख सकते है जब मलारी का बाप मलारी की माँ को लाठी से मारता है और कहता है कि तुम दोनों माँ बेटी हरजाई हो। जैसी माँ वैसी बेटी बार–बार उन लोगों पर वार करता है। मलारी की माँ हाथ पैर जोड़कर रोती हैं और अंत में चुप हो जाती है।

'मैला आँचल' में लक्ष्मी के चरित्र केवल मठों के महंतों द्वारा स्त्री शोषण एवं देह शोषण के रूप में किया जाता है। गणेश की नानी के रूप में किसी असहाय को डायन घोषित कर उस पर किए जाने वाले अमानवीय अत्याचार स्त्री के लिए कितना कष्ट दायक है। जुलूस में पवित्रा अपने सत्य कार्य से और सद्भाव से ही कामुक पशुओं के मध्य अपने सतीत्व की रक्षा की है।

'परती परिकथा में मलारी के संबंध में तरह–तरह की परस्पर विरोधी बातें अफवाह होती रहती है। शिक्षित होने पर भी उसे आजादी नहीं है।

'दीर्धतपा' में बेला गुप्त जीवन की विकृतियों को भोग चुकी है। फिर भी जीवन की विकृतियों को भाग कर उससे अलग हट गई है। आज सफेदपोश सामाजिक महिला संस्थाओं की अनैतिक आज व्यभिचारी का भंडाफोड़ करती है। कितने चौराहे में शरबतिया एवं मनमोहन की माँ का वेदना कष्ट, पीड़ा समाज को आईना दिखाने का कार्य करता है ।

रेणु जी के उपन्यासों में स्त्री जीवन की विविध झांकियां दिखाई पड़ती है। नारी की अस्तित्व और उसकी भावना को रौंदने

देने वाली सामाजिक विषमता को स्पष्ट करती है। रेणु की नारी सामाजिक यतनावों से गुजरती है। उनकी नारीयाँ यतनावों को झेलती भी है, उन यतनावों से आहत नारियों में छटपटाहट या आक्रोश अवश्य है, परंतु उनके चिंतन में संतुलन है उनमें समाधान के प्रति अधिक विश्वास है। इनकी नारियाँ सामाजिक विकृतियों का नग्न स्वरूप झेलती ही नहीं बल्कि उन विकृतियों से मिली पीड़ा का अनुभव भी करती हैं। इनके नारीयों की खास विशेषता है कि वे त्रासदी को सहते हुए भी समस्या का समाधान की तलाश करने का महत्वपूर्ण प्रयास करती है। रेणु जी के नारी समाज का हिस्सा मात्र है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *पाण्डे मैनेजर आलोचना की सामाजिकता' पृष्ठ– 253*
2. *रेणु, मैला आँचल, पृष्ठ –54–55*
3. *वही, पृष्ठ–257*
4. *गुप्ता डॉ कमला, हिंदी उपन्यासों में सामंतवाद, पृष्ठ– 382*
5. *रेणु, जुलूस, पृष्ठ–56*
6. *वही, पृष्ठ–154*
7. *वही, पृष्ठ– 78*
8. *रेणु, परती परिकथा, पृष्ठ– 88*
9. *वही, पृष्ठ–150*
10. *वही, पृष्ठ–46*
11. *रेणु, दीर्धतपा, पृष्ठ– 159*
12. *रेणु रचनावली, दीर्धतपा, पृष्ठ– 328*
13. *रेणु, कितने चौराहे, पृष्ठ –38*

14. *यायावर भरतएरेणु रचनावलीएभाग–1एपृष्ठ–17*

15. *यादव डॉ सुरेंद्र प्रतापए स्वतंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास में ग्रामीण यथार्थ और समाजवादी चेतना पृष्ठ –127*